ज्ञान. आवाज़. लोकतंत्र.
प्रिया

केस स्टडी

मार्च 2020

मुकुल के बदलाव की कहानी: यूथ-एन-डेमोक्रेसी फैलोशिप

लेखक: मुकुल चौहान, २१ साल, जामिया मिलिया इस्लामिया

मेरा नाम मुकुल सिंह चौहान है, मैंने अपनी जिंदगी के तकरीबन 18 साल कानपुर, उत्तर प्रदेश में बिताए हैं | वहां मैं अपने परिवार के साथ रहता था मेरे परिवार में मेरी मां, पिता और बहन है। कानपुर एक ऐसा शहर है जो मेरे दिल के बेहद करीब है। कानपुर बहुत अहिस्ता-आहिस्ता चलता है और दिल्ली तेज़ भागती है। दिल्ली में लोग मेट्रो की रफ़्तार वाले हैं बल्कि कानपुर बेफ़िक्री के साथ धीरे धीरे चलने वाला शहर है।

एक पत्रिकारिता के छात्र होने की वजह से मुझे समाज के संजीदा मुद्दे बहुत आकर्षित करते हैं और मैं लोगों से मिलना जुलना पसंद करता हूं| यही कारण था की यूथ एंड डेमोक्रेसी फ़ेलोशिप ने मुझे आकर्षित किया और मैंने इसमें भाग लेने का निर्णय लिया| प्रिया को में अपने विश्वविद्यालय के सीनियर्स के ज़रिये से जनता था जो की इस संस्था के साथ काम कर चुके हैं और इसकी सराहना करते हैं|

इस फ़ेलोशिप में सभी फेलो मेम्बेर्स पर विशेष रुप से ध्यान दिया गया। हम सब से हमारे कोऑर्डिनेटर ने व्यक्तिगत रूप से संवाद किया और हमें काफी कुछ सिखाने की कोशिश की गई। फेलोशिप की सबसे खास बात थी यहां बहुत सारे विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले साथी मिले जिनसे मिलकर हमने बहुत कुछ सीखा। मेरे सभी साथियों में कुछ ना कुछ खास था। कोई बहुत अच्छा वक्ता

था तो कोई बहुत अच्छा कवि, कोई चित्रकार था तो किसी को समाज की बहुत अच्छी समझ। फेलोशिप के सभी साथी अलग-अलग सामाजिक परिवेश अलग-अलग भाषा बोलने वाले थे पर कभी भी किसी भी स्थिति में किसी भी फेलो मेंबर द्वारा दूसरे मेंबर को असहज नहीं किया गया। सरल शब्दों में कहूं तो फैलोशिप में सभी परिवार के सदस्यों की तरह रहे।

प्रिया फेलोशिप में आने के बाद मुझे अपने अंदर बहुत परिवर्तन महसूस हुए। मुझे व्यक्तिगत तौर पर यह लगता है कि मैं आज एक पहले से बेहतर इंसान हूँ। इसके कोर्स ने मुझे मेरी आईडेंटिटी समझने में बहुत मदद की, मैं क्या हूं, मैं किन परिस्थितियों में कैसे काम करता हूं, मुझे बीते 6 महीनों में काफी अच्छे से समझ आया।

प्रिया फैलोशिप के सभी सेशन बेहद रोचक रहे। रोचक एवं प्रभावशाली ढंग से हमें गंभीर मुद्दों से परिचित कराया गया। हमें समाज के हर तबके के बारे में संवेदनशील बनाया गया जिन चीजों को लेकर हम पहले बहुत अलग तरह से प्रतिक्रिया देते थे अब उन्हीं चीजों को लेकर हमारे प्रतिक्रिया देने के तरीके में फर्क है। समाज हर जाति धर्म लिंग रंग-रूप के व्यक्ति से मिलकर बनता है और यह समाज समझने में इस फेलोशिप के सेशन ने मेरी बहुत मदद की| प्रिया फेलोशिप में हमें स्टाफ ने भी बहुत सहयोग दिया।

सोशल एक्शन प्रोजेक्ट के विषय(संविधान को जाने) के चुनाव के समय भी मैंने फ़ेलोशिप में बताए गए मॉड्यूल्स से प्रेरणा ली| मैं अपने प्रोजेक्ट से समाज को बेहतर ढंग से समझने की कोशिश करना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि मेरे प्रोजेक्ट से समाज संविधान को लेकर संवेदनशील बने और अपने अधिकारों और कर्तव्यों को बेहतर ढंग से समझ सके और संविधान उसे महज एक किताब नहीं बल्कि अपनी जिंदगी का एक जरूरी हिस्सा लगे।

मैं पत्रकारिता का विद्यार्थी हूं मुझे ऐसा लगता है की एक संवेदनशील इंसान ही बेहतर पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता या कुछ भी बन सकता है। मैं समाज के हर वर्ग को एक समान चश्मे से देखना चाहता हूं। मैं कभी भी किसी के साथ भेदभाव करना नहीं चाहता और मुझे उम्मीद है की इस फेलोशिप से मैं उस लक्ष्य के और करीब पहुँच सकता हूँ ।